तृतीय अध्याय

शोध विधि तथा प्रक्रिया

अध्याय–3

शोध विधि तथा प्रक्रिया

3.1 भूमिकाः–

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसमें प्रदतों के विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, गहन जांच, निरीक्ष करना, योजनाबद्ध अध्ययन व्यापक परीक्षण और तत्परता युक्त उद्देश्य सामान्यीकरण प्रक्रिया समाहित होती है।

पी.वी.युग के शब्दो मेंः–

"अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है। जिसके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है। तथा उन अनुक्रमों प्रारस्परिक संबंधो,कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्रकृति नियमों का अध्ययन किया जाता है,जो कि तथ्यों को निर्धारित करते है।"

मेकग्रेथ तथा वाटसन के शब्दो मेंः–

"अनुसन्धान एक प्रक्रिया है, जिसमें खोज प्रविधि का प्रयोग किया जाता है जिसके निष्कर्ष की उपयोगिता हो, ज्ञान वृद्धि की जाये, प्रगति के लिए प्रोत्साहित करे, समाज के लिये सहायक हो

तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से हल कर सकें।"

प्रस्तुत अध्ययन की विधि को देखे तो इनमें महाविद्यालयीन सर्वेक्षण का समावेश होता है। जिनमें महाविद्यालय से संबंधित समस्याओं का सर्वे कर उन पर विचार विमर्श किया जाता है, यहाँ इन्ही के अंतर्गत बी.एड प्रार्थना सभा से प्राप्त कौशल एवं मूल्य परिवर्तन पर अध्ययन किया जायेगा।

3.2 न्यादर्शः–

न्यादर्श पद्धति अनुसंधान की वह पद्धति है जिसमें अनुसंधान विषय के अंतर्गत संपूर्ण जनसंख्या से सावधानी पूर्वक कुछ इकाइयों को चुना जाता है, जो संपूर्ण जनसंख्या की आधारभूत विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती है।

न्यादर्श की परिभाषाएँः–

डब्ल्यू.जी. कोकरन के शब्दों में

"प्रत्येक विज्ञान की शाखा में हमारे साधन सीमित हैं। इसलिए सम्पूर्ण तथ्य के एक अंश के अधिक का अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसके बारे में ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है।"

पी. वी. यंग के अनुसारः–

"वह समस्त समूह जिसमें से प्रतिदर्श का चयन किया जाता है उसे जनसंख्या समग्र या पूर्ति कहते है।"

3.3 न्यादर्श का चयनः-

किसी भी अनुसंधान कार्य में प्रतिदर्श का चुनाव एवं उसकी व्याख्या महत्वपूर्ण पहलु होता है। प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा का ध्यान रखते हुए प्रतिदर्श को उद्देश्यपूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रतिदर्श का चयन गुजरात राज्य के आणंद जिले के आणंद शहर मे स्थित अशासकीय बी.एड प्रशिक्षण संस्था के 100 प्रशिक्षणार्थीयों को चयनित किया गया है।

तालिका क्रमांक 3.1

कॉलेज का प्रकार		कॉलेज का नाम	प्रशिक्षणार्थियों की संख्या		
			लडके	लडकियाँ	
अशासकीय		आणंद कॉलेज ओफ एज्युकेशन आणंद	23	77	
कुल	1	1	23	77	100

शोध प्रतिदर्श की विशेषताएँः-

1. इस शोध कार्य के लिये एक प्रशिक्षण संस्था से 100 प्रशिक्षणर्थीयों का चयन किया गया है।
2. इस शोध कार्य में (23) प्रशिक्षणार्थी एवं (77) प्रशिक्षणार्थीनीयों को प्रतिदर्श के रुप में चयन किया गया है।
3. इस शोध कार्य के लिये शहरी क्षेत्र कि प्रशिक्षण संस्था का चुनाव किया गया है।

3.4 शोध में प्रयुक्त चरः-

शाब्दिक रूप से variable शब्द का अर्थ होता है कि जो vary कर सके यानी जो परिवर्तित हो सके।

चर से एक एसी स्थिति व गुण का बोध होता है कि जिसके स्वरूप में एक वैज्ञानिक अध्ययन के अंतर्गत एक आयात पर विभिन्न मात्रात्मक तथा गुणात्मक परिवर्तन होते है।

- **स्वतंत्र चरः**

स्वतंत्र चर एक प्रयोग के वे कारक होते है, जिस पर प्रयोगकर्ता का नियंत्रण रहता है तथा जिनमें वह जैसा चाहे वैसा परिवर्तन कर सकता है।

- **आश्रित चरः**

स्वतंत्र चर के व्यवहार के कारण आश्रित चर परिवर्तन होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है।

- प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात राज्य के आणंद जिले का आणंद शहर स्थित एक बी.एड प्रशिक्षण संस्था का चयन किया गया है-

- अशासकीय बी.एड प्रशिक्षण संस्था में से 100 प्रशिक्षणार्थीयों को लिया गया।

N-100

अशासकीय बी.एड कॉलेज

प्रशिक्षणार्थी	प्रशिक्षणार्थीनीयाँ
(23)	(77)

3.5 प्रतिदर्श प्रमाणः–

शोध कार्य में परिकल्पनाओं को तार्किक आधार प्रदान करने के लिए प्रतिदर्श के रूप में 100 प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया।जिनका विवरण मैने उपरोक्त रेखाचित्र में दिया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चर निम्न लिखित है–

चरः–कौशल, प्रशिक्षणार्थी एवं मूल्य

3.6 शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

किसी भी शोधकार्य के लिए उपकरण का होना आवश्यक है। अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने स्व निर्मित अभिप्रायावली का निमार्ण किया गया। जिस में अल्पोर्ट वर्नन मूल्य अध्ययन का हिन्दी अनुवाद भटनागर तथा तण्डन ने (1975) में तथा स्प्रेन्सर का मूल्य परीक्षण का हिन्दी अनुवाद सिंह तथा वर्मा (1975) तथा पत्रिकाओं की सहायता ली गई। शोध में प्रस्तृत उपकरण को प्रशिक्षणार्थियों की प्रार्थना की गतिविधियों को ध्यान में रखकर बनाया गया। जिस में अभिव्यक्ति कौशल एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों को ध्यान में रखकर बनाया गया।

3.7 प्रदत्तों का संकलनः-

परीक्षण पूर्णरूपेण तैयार करने के बाद प्रदतों के संकलन हेतु महाविद्यालय द्वारा एक निश्चित समय सीमा दी गई। अध्ययन हेतु गुजरात राज्य के आणंद जिले के आणंद शहर स्थित एक बी.एड प्रशिक्षण संस्था से आंकडों को एकत्रित किया गया।

सबसे पहले आणंद जिले का आणंद शहर स्थित बी.एड कॉलेज को पसंद करके उनके प्राचार्य महोदय से मुलाकात कर अपने शोध कार्य के बारे में जानकारी दी इस आधार पर उनहोने दिनांक व समय निर्धारित किया। निर्धारित दिनों के दौरान महाविद्यालय में जाकर अध्यापकों के साथ बातचीत कर शोध के बारे में बताया उसकें बाद वर्गखंड में जाकर प्रशिक्षणार्थीयों को प्रश्नपत्र के बारे में बात की और सामान्य जानकारी को भरने के लिए बताया गया उसके बाद 1घंटे का समय दिया गया जिसमे प्रशिक्षणार्थियों को अपनी अपनी योग्यता के अनुसार प्रश्न के उतर देने के लिये कहा गया और इस बात पर ध्यान दिया गया कि कोई प्रशिक्षणार्थी एक दूसरे की नकल न करे।

आणंद जिले की अशासकीय बी.एड् कॉलेज का नाम निम्नलिखित है-

- **आणंद कॉलेज ओफ एज्युकेशन आणंद**

3.8 शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

शोध समस्या से संबंधित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरान्त उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय का प्रयोग किया जाता हैं। जिस में निष्कर्षो तथा परिणामो की विश्वसनीयता एवं वैध रूप में प्रस्तुत किया जा सके प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिशत सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग किया गया।